कार्तिक-पौष, २०७९
अक्टूबर-दिसम्बर, 2022

विन्देम देवतां वाचम्

ISSN : 0378-391X
भाग-83, अंक: 4
यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शताब्दी की ओर

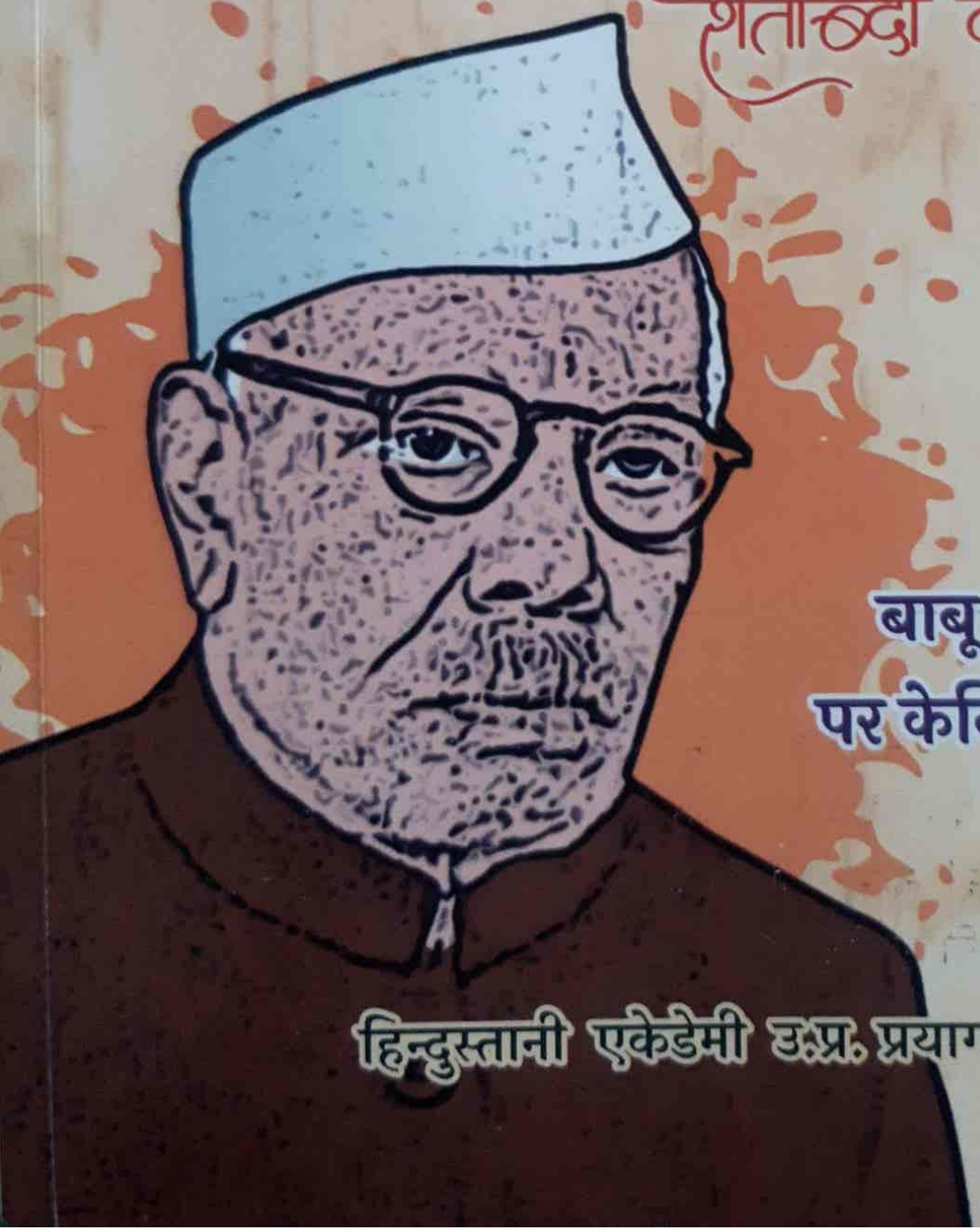

बाबू गुलाबराय पर केन्द्रित विशेषांक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज

बाबू गुलाबराय की आत्मकथा 'मेरी असफलताएँ' का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रीति सिंह

बाबू गुलाब राय एक आलोचक, लेखक, निबंधकार थे। उन्होंने दर्शन, मनोविज्ञान, राजनीति और विज्ञान जैसे गंभीर विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखकर हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध किया। बाबू गुलाब राय के साहित्य को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–दार्शनिक, साहित्यिक निबंध, हास्य व्यंग्य।

बाबू गुलाब राय का प्रारंभिक कार्य दार्शनिक श्रेणी के अंतर्गत आता है। 'राष्ट्रीयता' 'भारतीय संस्कृति की रूपरेखा', 'शांति धर्म', 'मैत्री धर्म' आदि पुस्तकों में उन्होंने राष्ट्र को प्राथमिकता देते हुए अंतराष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद और क्षेत्रवाद के बीच में सद्भाव के सिद्धांत स्थापित करने के पक्षधर रहे हैं।

बाबू गुलाब राय 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में द्विवेदी एवं शुक्ल युग के एक प्रमुख आलोचक थे। डॉ. गुलाब राय के अनेक निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जिनमें फिर निराशा क्यों, मन की बातें, कुछ उथले कुछ गहरे, मेरे निबंध, अध्ययन और आस्वाद आदि उल्लेखनीय हैं । गणपति चंद्रगुप्त लिखते हैं– "आपके निबंधों को मुख्यता चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–1. दार्शनिक एवंविचारात्मक, 2. साहित्य व समीक्षात्मक, 3. आत्मसंस्मरणात्मक और 4. हास्य विनोदात्मक। इनके निबंधों में व्यक्तित्व की सरलता, अनुभूति की तरलता, विचारों की स्पष्टता एवं शैली की सुबोधता मिलती है"।[1]

हास्य व्यंग्यकार के रूप में भी बाबू गुलाब राय को अत्यंत सफलता प्राप्त हुई है। इनकी रचनाओं में हास्य व्यंग स्थान-स्थान पर मिलता है। परंतु महत्वपूर्ण यह भी है कि उसके आलम्बन वे स्वयं ही हैं । 'मेरी असफलताएँ' में गुलाब राय ने वैयक्तिक विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ' की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

"खैर, आजकल उस भैंस का दूध कम हो जाने पर भी और अपने मित्रों को छाछ भी न पिला सकने की विवशता की झूझल के होते हुए भी उसके लिए भूसा लाना अनिवार्य हो जाता है। कहाँ साधारणीकरण और अभिव्यंजनावाद की चर्चा और कहाँ भूसे का भाव । भूसा खरीद कर मुझे भी गधे के पीछे ऐसे ही चलना पड़ता है, जैसे बहुत से लोग अक्ल के पीछे लाठी लेकर चलते हैं ।लेकिन गधे के पीछे चलने में उतना ही आनंद आता है जितना कि पलायन वादी को जीवन से भागने में"।[2]

यहाँ बाबू गुलाब राय ने स्वयं को हास्यास्पद स्थिति में प्रस्तुत करते हुए विनोद की सृष्टि की है। किंतु गणपति चंद्र लिखते हैं–"अप्रत्यक्ष रूप में तर्क शून्य प्रलाप करने वाले असामाजिक एवं पलायनवादी साहित्यकारों पर भी मीठा व्यंग्य किया गया है। वस्तुत: वैयक्तिक प्रसंगों की ओट में असामाजिक तत्वों पर व्यंग्य करना गुलाब राय जी की निजी विशेषता है"।[3]

गुलाब राय के निबंधों में विश्लेषण और व्यंग्य का सुंदर संयोग घटित हुआ है। गुलाब राय जी की विशेषता यह है कि उन्होंने निबंध के प्राय: सभी प्रकारों को स्वीकार किया और परिमाण तथा गुण दोनों दृष्टि से श्रेष्ठ निबंधों की सृष्टि की। गुलाब राय मूलत: विचारक और अध्यापक थे। दर्शन शास्त्र का अध्ययन करने के कारण तर्क बुद्धी का आश्रय ग्रहण करके विषय विवेचन में संलग्न होते थे। बाबू गुलाब राय ने द्विवेदी युग में ही लिखना प्रारंभ कर दिया था किंतु छायावाद युग की सौंदर्य दृष्टि से भी उन्होंने प्रभाव ग्रहण किया और गंभीर मनोवैज्ञानिक निबंध के साथ ही आत्मपरक शैली में हास्य गर्भित निबंधों की भी रचना की।

साहित्यिक अवदान की दृष्टि से बाबू गुलाब राय का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शांति धर्म, मैत्री धर्म, काव्यशास्त्र,